डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन और उसकी प्रासंगिकता"

25, 26 एवं 27 अप्रैल, 2022

आयोजक :

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नयी दिल्ली

एवं

प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग

(डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय)

रजिस्ट्रेशन स्मार्ट कार्ड

Registration Link
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSd_cYglvU_Ae2A8gQAWMU
pmzh1OplmDQ8mavPspuIeMSWcgkg/viewform

Website Link
https://cutt.ly/hDiiKax

Whatsapp Chat Link
https://chat.whatsapp.com/DqFHowzamvZABepMttcwHv

QR Code

प्रेषक : संगोष्ठी आयोजक, प्रो. अनूप कुमार, विभागाध्यक्ष - प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग, मो : +91 7985150920, +91 6393261433

अतिथियों से कोविड-19 के शिष्टाचार का पालन अपेक्षित है।

प्रधान संरक्षक

प्रो. रविशंकर सिंह
कुलपति
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्विद्यालय

संरक्षक मण्डल

प्रो. कुमार रत्नम	: मेंबर सेक्रेटरी, भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद्, नयी दिल्ली
प्रो. अजय प्रताप सिंह	: कुलानुशासक, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. एन. के. तिवारी	: डीन, कला मानविकी, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
श्री रमेश भैया	: विनोबा सेवा आश्रय, बेटारा, शाहजहांपुर
प्रो. अशोक शुक्ला	: डीन ऑफ़ कॉमर्स, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. आर. के. तिवारी	: भौतिक विज्ञान एवं इलेक्ट्रानिक विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. एम. पी. सिंह	: इतिहास एवं पुरातत्व विभाग,डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. जसवंत सिंह	: पर्यावरण विज्ञान विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि.,अयोध्या
प्रो. एस. एन. शुक्ला	: भौतिक विज्ञान एवं इलेक्ट्रानिक विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. सी. के. मिश्रा	: वित्त अधिकारी एवं डीन विज्ञान संकाय, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. मृदुला मिश्रा	: इकोनॉमिक्स एंड रूरल डेवलपमेंट विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. राजीव गौड़	: माइक्रोबायोलॉजी विभाग,डॉ. रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. आशुतोष सिन्हा	: इकोनॉमिक्स एंड रूरल डेवलपमेंट विभाग, डॉ. रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. हिमांशु शेखर सिंह	: व्यवसाय प्रबंधन और उद्यमिता विभाग, डॉ. रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. फारुख जमाल	: जीव रसायन, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि.,अयोध्या
प्रो. नीलम पाठक	: विभागाध्यक्ष, जीव रसायन, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. शैलेन्द्र कुमार	: माइक्रोबायोलॉजी विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. के. के. वर्मा	: भौतिक विज्ञान एवं इलेक्ट्रानिक विभाग,डॉ. रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. एस. एस. मिश्रा	: विभागाध्यक्ष, गणित एवं सांख्यिकी विभाग, डॉ. रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. विनोद कुमार श्रीवास्तव	: विभागाध्यक्ष, इकोनॉमिक्स एंड रूरल डेवलपमेंट विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. शैलेन्द्र वर्मा	: व्यवसाय प्रबंधन और उद्यमिता विभाग, डॉ. रा.लो.अ.वि.वि.,अयोध्या
प्रो. सिद्धार्थ शुक्ला	: विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान विभाग, डॉ. रा.लो.अ.वि.वि.,अयोध्या
प्रो. गंगा राम मिश्रा	: भौतिक विज्ञान एवं इलेक्ट्रानिक विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या

परामर्शदात्री समिति

प्रो. एस. एस. रावत	: प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन, बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय
प्रो. पी. पी. सिंह	: पूर्व निदेशक/ प्रोफेसर, प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग,डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. जय प्रकाश दुबे	: प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रो. विवेक बापट	: आजीवन शिक्षा एवं प्रसार शिक्षा विभाग, जीवाजी यूनिवर्सिटी
डॉ. सुन्दर लाल त्रिपाठी	: पूर्व सहायक निदेशक, प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि.,अयोध्या
डॉ. संदीप कुमार सिंह	: विभागाध्यक्ष, प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग, सी. एस. जे. एम. यू. , कानपुर
डॉ. नीरज बाजपेई	: प्राचार्य, रामकृष्ण परमहंस पी.जी. कॉलेज, बहराइच
डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	: ओ.एस.डी. - वाईस चांसलर, डॉ.रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. प्रदीप कुमार केसरवानी	: निदेशक, सम्राट हर्षवर्धन शोध, प्रयागराज
डॉ. डी. एन वर्मा	: एसोसिएट प्रोफेसर, ऋषभ देव जैन पीठ, डॉ. रा.लो.अ.वि.वि., अयोध्या
प्रो. पुष्पेंद्र दुबे	: विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल साइंस, इंदौर

आयोजन समिति

डॉ. सुरेंद्र मिश्रा (आयोजन सचिव)	श्री अंकित मिश्रा
डॉ. विनोद चौधरी	सुश्री प्रिया श्रीवास्तव
डॉ. अभिषेक सिंह	श्रीमती शालिनी पांडेय
डॉ. तरुन गंगवार	श्रीमती विनीता पटेल
डॉ. मुकेश वर्मा	डॉ. प्रतिभा त्रिपाठी
डॉ. विजेन्दु चतुर्वेदी	डॉ. सरिता पाठक
डॉ. अनुराग सिंह	डॉ. प्रतिभा
डॉ. राजेश कुशवाहा	डॉ. चंद्रशेखर
डॉ. सुधीर सिंह	डॉ. अरुण चौबे
श्री रमेश यादव	डॉ. आनंद बिहारी
डॉ. चंद्रकांत केथवास	

कार्यक्रम विवरण

दिनांक : 25.04.2022

09:00 - 10:00	Registration & Breakfast
10:30 - 12:30	Inaugural Ceremony
12:30 - 01:30	Lunch Break
01:30 - 03:30	Session - 1
03:30 - 05:00	Session - 2
05:00 - 05:30	Tea

दिनांक : 26.04.2022

09:30 - 10:30	Breakfast
10:30 - 12:30	Session - 3
12:30 - 01:30	Lunch
01:30 - 03:00	Session - 4
03:00 - 04:30	Session - 5
04:30 - 05:00	Tea

दिनांक : 27.04.2022

08:30 - 09:00	Tea & Breakfast
09:00 - 10:30	Valietory Function

डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या

राष्ट्रीय संगोष्ठी

"आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन और उसकी प्रासंगिकता"

25,26 एवं 27 अप्रैल, 2022

आयोजक :
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नयी दिल्ली
एवं
प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग
(डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय)

आयोजन स्थल
संत कबीर सभागार
(विश्वविद्यालय परिसर)

प्रेषक :
प्रो. अनूप कुमार
संगोष्ठी संयोजक एवं विभागाध्यक्ष
प्रौढ़ एवं सतत शिक्षा विभाग
मो : +91 7985150920, +91 6393261433
ईमेल आई.डी. : anupkumaracee@gmail.com

अतिथियों से कोविड-19 के शिष्टाचार का पालन अपेक्षित है।

संगोष्ठी का विषय

आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन और उसकी प्रासंगिकता

भारतीय चिन्तन में दर्शन शब्द दृश् धातु से बना है - दृश् का अर्थ होता है देखना अर्थात् जिसके द्वारा सत्य तत्व का ज्ञान हो। ज्ञान ही वही है। प्राचीन भारत में सभी प्रकार के चिन्तन को दर्शन कहा गया है, जिसमें सत्य की खोज की जाती है क्योंकि "जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। विनोबा जी कहा करते थे कि जो जीवन भर विद्यार्थी बना रहेगा वही अच्छा शिक्षक बन सकेगा। विनोबा जी शिक्षा को अहिंसक क्रान्ति का औज़ार मानते थे, उनका मानना था कि विचार की ताकत सबसे बड़ी ताकत है, विचार परमाणु अस्त्रों से भी अधिक प्रभावकारी है। विचार - आचार-संचार - प्रचार की प्रक्रिया को वे अहिंसा के कार्य में आवश्यक मानते थे।

आचारवान् शिक्षक विचार देने का सबसे अच्छा कार्य कर सकते हैं। देश की राजनीतिक चेतना के साथ- साथ शैक्षिक चेतना के विकास में योगदान देने वाले चिंतकों व शिक्षा दार्शनिकों में विनोबा भावे का नाम अग्रणी है। गीता, ब्रह्मसूत्र, शंकराचार्य आदि के समय से चली आ रही समन्वय की भारतीय परम्परा के वे जीवित प्रतीक थे। भारत में पिछले 100 वर्षों से चली आ रही शिक्षा पद्धति में कुछ शिक्षकों ने परिवर्तन की अपेक्षा जतायी है। इतना ही नहीं स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री ने भी शिक्षा में अमूल-चूल परिवर्तन की मंशा जतायी है। फिर भी शिक्षा का वही स्वरूप ज्यों का त्यों चला आ रहा था। एक लम्बे अंतराल के बाद भारत सरकार ने नयी शिक्षा नीति 2020 देश के सामने प्रस्तुत की। इस नयी शिक्षा नीति में विनोबा भावे के दर्शन की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। विनोबा जी ने 15 अगस्त 1947 को एक सार्वजनिक मंच से यह उद्घोष किया था की 15 अगस्त 1947 को जैसे झंडा बदला वैसे ही शिक्षा भी तुरंत बदलनी चाहिए। विनोबा जी ने त्रिसूत्री शिक्षा का विचार रखा - योग, उद्योग, सहयोग, आज की शिक्षा में इन तीनों का अभाव है। भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है - "न हि ज्ञानेन सदृशम पवित्रमिह विद्यते" ।

ज्ञान से बढ़कर कोई चीज़ पवित्र नहीं है। लेकिन आज विद्या चाहने वाला विद्यार्थी कोई नहीं रहा, सब परीक्षार्थी बन गए और परीक्षा भी केवल नौकरी पाने के लिए। आज की शिक्षा वह भी नहीं दे पा रही है। शिक्षित और उच्चशिक्षित बेरोज़गारों की बढ़ती संख्या शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह पैदा कर रही है। अन्य ज्ञान के साथ - साथ, उद्योग को भी शिक्षा में सम्मिलित किया जाये तो शिक्षा पाने पर प्रत्येक छात्र अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा, नौकरी की तलाश में दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर नहीं होगा। आज की शिक्षा देख विनोबा जी को पुरानी कहावत याद आयी थी, असंतुष्टो द्विजो नष्ट, असंतुष्ट शिक्षित नष्ट हो जाता है। शिक्षा अर्थात् जीवन की शिक्षा हो, जिसमें जीवनयापन के लिए हुनर प्राप्त हो, बुद्धि के पटल खुले ताकि ज्ञान प्राप्त होता रहे और हृदय साफ हो ताकि सबसे प्रेम करने की वृत्ति हो। शिक्षा का तीसरा सूत्र सहयोग होना चाहिए, आज के पूंजीवादी समाज में ठीक इसके विपरीत स्पर्धा को, होड़ को, गलाकाट प्रतियोगिता को बढ़ावा दिया जा रहा है। जबकि होना यह चाहिए कि शिक्षा के द्वारा सहयोग का वातावरण बने। जो सक्षम हैं वे कमजोरों को आगे बढ़ने में सहायता करें ताकि कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ सकें जैसा कि वेद - मन्त्रों में सिखाया गया था -"संगच्छ्ध्वं संवद्ध्वं, सं नो मनांसि जानताम्" ।

हम साथ चलें, साथ बोलें, हमारे दिल जुड़े हुए हों। योग-उद्योग-सहयोग पर आधारित शिक्षा नये इंसान और नये समाज का निर्माण कर सकती है, यही लक्ष्य है, यही उद्देश्य है। विनोबा जी के जीवन दर्शन की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे धर्म को अध्यात्म से अलग मानते थे। उन्होंने आध्यात्मिकता को मानवता से जोड़ा और मानवीय गुणों के रूप में परिभाषित किया। संत कबीर की तरह निर्भीक होकर उन्होंने अपने विचारों को उद्घाटित किया। उनका चिंतन 'सर्वोदय' पर आधारित था और सर्वोदय दर्शन गांधी के सिद्धांतों पर आधारित था परन्तु विनोबा जी ने उसे नवीन और व्यापक रूप में प्रस्तुत कर, एक व्यावहारिक आंदोलन के रूप में परिवर्तित कर दिया।

उनका सर्वोदय दर्शन आज की असमानतापूर्ण सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक समरूपता का सन्देश देता है। उनका दृष्टिकोण ज्ञान प्राप्ति के लिए व्यापक था। वे यद्यपि सर्वोदयी दर्शन तथा उदार अध्यात्मवाद के समर्थक थे लेकिन विज्ञान को भी वे मनुष्य के लिए आवश्यक मानते थे। वे भारत में एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें सामाजिक और आर्थिक समानता हो समाज अपने श्रम से कुटीर उद्योगों की सहायता से विकसित हो। उनके शिक्षा दर्शन में इन्हीं विचारधाराओं का समावेश है। विनोबा जी, व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाने के लिए उपयोगी शिल्पों के चयन की सलाह देते हैं। उनका कहना था कि उपयुक्त शिक्षा वह होती है जो बालक का सर्वांगीण विकास कर सके। इन शिल्पों के माध्यम से वे बालक का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना चाहते थे। उन्होंने विद्यालय को लघु कर्मशाला के रूप में परिवर्तित करना चाहा, जहाँ से बालक शिल्पों का प्रशिक्षण प्राप्त कर अर्थोपार्जन कर सकें। देश में चल रहे कौशल विकास कार्यक्रम और "आत्म निर्भर भारत" का नारा आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक चिंतन की उपयोगिता, प्रासंगिकता तथा सर्वव्यापकता का ज्वलंत उदाहरण है।

आचार्य विनोबा जी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों का अप्रतिम योगदान मानते हैं। उनका स्पष्ट विचार है कि प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक भारत में आचार्यों की एक लम्बी परंपरा रही है। इतनी विशाल परम्परा विश्व के किसी देश के इतिहास में नहीं पायी जाती। उनके शिक्षा दर्शन की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षित होने की बात करते हैं। उनका विचार था कि स्त्रियों में बहुत बड़ी शक्ति होती है जो सामाजिक क्रान्ति कर सकती है। लेकिन क्रान्ति के लिए इन्हें सुशिक्षित बनाने की आवश्यकता है। विनोबा जी कहते थे की लड़कियां, लड़कों की तरह शिल्पों को सीखें, शारीरिक श्रम करें तथा अपने पैरों पर खड़ी हों। सही मायने में वर्तमान में चल रहे "शक्ति मिशन कार्यक्रम" के प्रणेता आचार्य विनोबा जी ही थे। उनका शैक्षिक योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका शिक्षा दर्शन आज भी हमारा मार्ग दर्शन कर सकता है। जब शिक्षा की पुनर्रचना होगी तब हमें उनके द्वारा बताये गये विचारों को सम्मिलित कर अपने देश की शिक्षा को पूर्ण रूप से स्वदेशी व समाजोपयोगी बना सकते हैं।

संगोष्ठी में मुख्य रूप से निम्न बिंदुओं पर शिक्षा विशेषज्ञों, विद्वानों एवं शोधार्थियों के द्वारा शोधपत्र प्रस्तुत किये जायेंगे, जिन पर सारगर्भित विचार-विमर्श होगा :

1. आचार्य विनोबा भावे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
   Personality and Creativity of Acharya Vinoba Bhave.
2. आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन।
   Education philosophy of Acharya Vinoba Bhave.
3. गांधी चिंतन एवं विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन।
   Gandhi's thought and education philosophy of Vinoba Bhave.
4. आचार्य विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव।
   Social and Economic Impact of Acharya Vinoba Bhave's Philosophy of Education.
5. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक-विचार और वर्तमान नयी शिक्षा नीति।
   Educational thoughts of Acharya Vinoba Bhave and Current New Education Policy .
6. शिल्प एवं ग्राम्य प्रोद्योगिकी और विनोबा भावे की शिक्षा पद्धति।
   Crafts and Rural Technology and Education Methodology of Vinoba Bhave.
7. आचार्य विनोबा भावे की शिक्षा पद्धति और वर्तमान शिक्षा।
   Education Methodology of Acharya Vinoba Bhave and Current Education.
8. योग-उद्योग-सहयोग।
   Yoga-Industry-Cooperation.
9. विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन की सामाजिक एवं आर्थिक उपयोगिता।
   Social and Economic Utility of Education Philosophy of Vinoba Bhave .
10. नारी स्वावलम्बन और विनोबा भावे।
    Women Self-Reliance and Vinoba Bhave.

शोध पत्र के सम्बन्ध में

इस तीन दिवसीय ऑफलाइन संगोष्ठी में सहभागिता के लिए शोध पत्र की प्रस्तुति के साथ आप सादर आमंत्रित हैं। शोधकर्ता उपरोक्त किसी एक बिंदु पर अथवा एक से अधिक बिंदुओं पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं। शोध पत्र मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए तथा 3000 से 4000 शब्दों के मध्य हो। स्कैन कॉपी स्वीकार नहीं होगी। शोध पत्र Word File में ही ईमेल करें। हिंदी के लिए Kruti Dev 010 Font तथा अंग्रेजी के लिए Times New Roman का प्रयोग करें। शोध पत्र को anupkumaracee@gmail.com पर दिनांक 15 April, 2022 तक अवश्य प्रेषित कर दें। शोध पत्र पर शोधकर्ता अपना ईमेल एवं मोबाइल नंबर अवश्य अंकित करें। शोध पत्र वाचन के पश्चात् हार्ड कॉपी सत्राध्यक्ष के पास अवश्य जमा करा दें, अन्यथा शोध पत्र प्रकाशन हेतु विशेषज्ञ समिति द्वारा चयनित नहीं हो पायेगा।

पंजीकरण शुल्क

संगोष्ठी में सहभागिता हेतु पंजीकरण शुल्क 1200 रु. (एक हज़ार दो सौ रुपये) मात्र देय है। संयुक्त रूप से शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले सहभागी व्यक्तिगत रूप से अलग - अलग पंजीकरण करें। सहभागीगण 15 अप्रैल, 2022 तक पंजीकरण करा लें। शुल्क का भुगतान कैश / डी. डी. / चेक द्वारा भी किया जा सकता है। डी. डी. / चेक के पीछे सहभागीगण अपना विवरण अवश्य लिख दें। डी. डी. / चेक द्वारा भुगतान "Head - Department of Adult & Continuing Education, Dr. Rammanohar Lohia Awadh University" के पक्ष में देय होगा। ऑनलाइन पेमेंट विश्विद्यालय के खाते - "Head-Department of Adult & Continuing Education, Dr. Rammanohar Lohia Awadh University", A/c No. 5212523627, ब्रांच : अवध यूनिवर्सिटी कैंपस, I.F.S.C. कोड : CBIN0283302 पर किया जायेगा। ऑनलाइन पेमेंट का विवरण पंजीकरण फॉर्म में अवश्य भरें और उसको ईमेल भी कर दें। सभी सहभागी अपने शोध पत्र के साथ अपने ऑनलाइन पेमेंट का विवरण एवं उसकी एक छवि भी अनिवार्य रूप से संलग्न करें। संगोष्ठी में भाग लेने वाले सहभागीगण सभागार में प्रवेश करते समय पंजीकरण रसीद एवं परिचय पत्र / आधार कार्ड अपने पास अवश्य रखें। सहभागीगण समय से सभागार में प्रवेश कर अपना स्थान ग्रहण करें। सभी सहभागीगणों से अनुरोध है कि वे अपने मोबाइल फ़ोन को साइलेंट मोड पर या स्विच ऑफ़ रखें।

भोजन की व्यवस्था : पंजीकरण करा चुके सहभागियों के लिए ब्रेकफास्ट, लंच एवं चाय (Tea) की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। संगोष्ठी में सहभागिता हेतु किसी भी प्रकार का मार्ग व्यय देय नहीं है।

शोध पत्रों का प्रकाशन : निर्धारित तिथि के अंदर प्रेषित शोध पत्रों का विषय विशेषज्ञों द्वारा चयनित होने पर यथाशीघ्र प्रकाशन ICPR के साथ किया जायेगा, जिसे निर्धारित शुल्क देकर प्राप्त किया जा सकता है। प्रोसीडिंग का पेमेंट "Head - Department of Adult & Continuing Education, Dr. Rammanohar Lohia Awadh University" में जमा करना होगा।

ऑनलाइन पंजीकरण लिंक

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSd_cYgIvU_Ae2A8gQAWMUpmzh1OpImDO8mavPspuleMSWcgkg/viewform

संगोष्ठी का विषय

आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन और उसकी प्रासंगिकता

भारतीय चिन्तन में दर्शन शब्द दृश् धातु से बना है - दृश् का अर्थ होता है देखना अर्थात् जिसके द्वारा सत्य तत्त्व का ज्ञान हो। ज्ञान ही वही है। प्राचीन भारत में सभी प्रकार के चिन्तन को दर्शन कहा गया है, जिसमें सत्य की खोज की जाती है क्योंकि "जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। विनोबा जी कहा करते थे कि जो जीवन भर विद्यार्थी बना रहेगा वही अच्छा शिक्षक बन सकेगा। विनोबा जी शिक्षा को अहिंसक क्रान्ति का औज़ार मानते थे, उनका मानना था कि विचार की ताकत सबसे बड़ी ताकत है, विचार परमाणु अस्त्रों से भी अधिक प्रभावकारी है। विचार - आचार-संचार - प्रचार की प्रक्रिया को वे अहिंसा के कार्य में आवश्यक मानते थे।

आचारवान शिक्षक विचार देने का सबसे अच्छा कार्य कर सकते हैं। देश की राजनीतिक चेतना के साथ- साथ शैक्षिक चेतना के विकास में योगदान देने वाले चिंतकों व शिक्षा दार्शनिकों में विनोबा भावे का नाम अग्रणी है। गीता, ब्रह्मसूत्र, शंकराचार्य आदि के समय से चली आ रही समन्वय की भारतीय परम्परा के वे जीवंत प्रतीक थे। भारत में पिछले 100 वर्षों से चली आ रही शिक्षा पद्धति में कुछ शिक्षकों ने परिवर्तन की अपेक्षा जतायी है। इतना ही नहीं स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री ने भी शिक्षा में अमूल-चूल परिवर्तन की मंशा जतायी है। फिर भी शिक्षा का वही स्वरुप ज्यों का त्यों चला आ रहा था। एक लम्बे अंतराल के बाद भारत सरकार ने नयी शिक्षा नीति 2020 देश के सामने प्रस्तुत की। इस नयी शिक्षा नीति में विनोबा भावे के दर्शन की स्पष्ट छाप दृष्टिगोचर होती है। विनोबा जी ने 15 अगस्त 1947 को एक सार्वजनिक मंच से यह उद्घोष किया था की 15 अगस्त 1947 को जैसे झंडा बदला वैसे ही शिक्षा भी तुरंत बदलनी चाहिए। विनोबा जी ने लिखुली शिक्षा का विचार रक्खा - योग, उद्योग, सहयोग, आज की शिक्षा में इन तीनों का अभाव है। भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है - "न हि ज्ञानेन सदृशम पवित्रमिह विद्यते" ।

ज्ञान से बढ़कर कोई चीज़ पवित्र नहीं है। लेकिन आज विद्या चाहने वाला विद्यार्थी कोई नही रहा, सब परीक्षार्थी बन गए और परीक्षा भी केवल नौकरी पाने के लिए। आज की शिक्षा वह भी नहीं दे पा रही है। शिक्षित और उच्चशिक्षित बेरोज़गारों की बढ़ती संख्या शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह पैदा कर रही है। अन्य ज्ञान के साथ - साथ, उद्योग को भी शिक्षा में सम्मिलित किया जाये तो शिक्षा पाने पर प्रत्येक छात्र अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा, नौकरी की तलाश में दर-दर की ठोकरें खाने के लिए मजबूर नहीं होगा। आज की शिक्षा देख विनोबा जी को पुरानी कहावत याद आयी थी, असंतुष्टों द्विजों नष्टः, असंतुष्ट शिक्षित नष्ट हो जाता है। शिक्षा अर्थात् जीवन की शिक्षा हो, जिसमें जीवनयापन के लिए हुनर प्राप्त हो, बुद्धि के पटल खुलें ताकि ज्ञान प्राप्त होता रहे और हृदय साफ़ हो ताकि सबसे प्रेम करने की वृत्ति हो। शिक्षा का तीसरा सूत्र सहयोग होना चाहिए, आज के पूंजीवादी समाज में ठीक इसके विपरीत स्पर्धा को, होड़ को, गलाकाट प्रतियोगिता को बढ़ावा दिया जा रहा है। जबकि होना यह चाहिए कि शिक्षा के द्वारा सहयोग का वातावरण बने। जो सक्षम हैं वे कमजोरों को आगे बढ़ने में सहायता करें ताकि कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ सकें जैसा कि वेद - मन्त्रों में सिखाया गया था -"संगच्छध्वं संवदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्" ।

हम साथ चलें, साथ बोलें, हमारे दिल जुड़े हुए हों। योग-उद्योग-सहयोग पर आधारित शिक्षा नये इंसान और नये समाज का निर्माण कर सकती है, यही लक्ष्य है, यही उद्देश्य है। विनोबा जी के जीवन दर्शन की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे धर्म को अध्यात्म से अलग मानते थे। उन्होंने आध्यात्मिकता को मानवता से जोड़ा और मानवीय गुणों के रूप में परिभाषित किया। संत कबीर की तरह निर्भीक होकर उन्होंने अपने विचारों को उद्घाटित किया। उनका चिंतन "सर्वोदय" पर आधारित था और सर्वोदय दर्शन गांधी के सिद्धांतों पर आधारित था परन्तु विनोबा जी ने उसे नवीन और व्यापक रूप में प्रस्तुत कर, एक व्यावहारिक आंदोलन के रूप में परिवर्तित कर दिया।

उनका सर्वोदय दर्शन आज की असमानतापूर्ण सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक समरूपता का सन्देश देता है। उनका दृष्टिकोण ज्ञान प्राप्ति के लिए व्यापक था। वे यद्यपि सर्वोदयी दर्शन तथा उदार अध्यात्मवाद के समर्थक थे लेकिन विज्ञान को भी वे मनुष्य के लिए आवश्यक मानते थे। वे भारत में एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसमें सामाजिक और आर्थिक समानता हो समाज अपने श्रम से कुटीर उद्योगों की सहायता से विकसित हो। उनके शिक्षा दर्शन में इन्हीं विचारधाराओं का समावेश है। विनोबा जी, व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाने के लिए उपयोगी शिल्पों के चयन की सलाह देते हैं। उनका कहना था कि उपयुक्त शिक्षा वह होती है जो बालक का सर्वांगीण विकास कर सके। इन शिल्पों के माध्यम से वे बालक का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना चाहते थे। उन्होंने विद्यालय को लघु कर्मशाला के रूप में परिवर्तित करना चाहा, जहाँ से बालक शिल्पों का प्रशिक्षण प्राप्त कर अर्थोपार्जन कर सकें। देश में चल रहे कौशल विकास कार्यक्रम और "आत्म निर्भर भारत" का नारा आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक चिंतन की उपयोगिता, प्रासंगिकता तथा सर्वग्राह्यता का ज्वलंत उदाहरण है।

आचार्य विनोबा जी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षकों का अप्रतिम योगदान मानते हैं। उनका स्पष्ट विचार है कि प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक भारत में आचार्यों की एक लम्बी परंपरा रही है। इतनी विशाल परम्परा विश्व के किसी देश के इतिहास में नहीं पायी जाती। उनके शिक्षा दर्शन की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षित होने की बात करते हैं। उनका विचार था कि स्त्रियों में बहुत बड़ी शक्ति होती है जो सामाजिक क्रान्ति कर सकती है। लेकिन क्रान्ति के लिए इन्हें सुनिश्चित बनाने की आवश्यकता है। विनोबा जी कहते थे की लड़कियां, लड़कों की तरह शिल्पों को सीखें, शारीरिक श्रम करें तथा अपने पैरों पर खड़ी हों। सही मायने में वर्तमान में चल रहे "शक्ति मिशन कार्यक्रम" के प्रणेता आचार्य विनोबा जी ही थे। उनका शैक्षिक योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उनका शिक्षा दर्शन आज भी हमारा मार्ग दर्शन कर सकता है। जब शिक्षा की पुनर्रचना होगी तब हमें उनके द्वारा बताये गये विचारों को सम्मिलित कर अपने देश की शिक्षा को पूर्ण रूप से स्वदेशी व समाजोपयोगी बना सकते हैं।

संगोष्ठी में मुख्य रूप से निम्न बिंदुओं पर शिक्षा विशेषज्ञों, विद्वानों एवं शोधार्थियों के द्वारा शोधपत्र प्रस्तुत किये जायेंगे, जिन पर सारगर्भित विचार-विमर्श होगा :

1. आचार्य विनोबा भावे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
   Personality and Creativity of Acharya Vinoba Bhave.
2. आचार्य विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन।
   Education philosophy of Acharya Vinoba Bhave.
3. गांधी चिंतन एवं विनोबा भावे का शिक्षा दर्शन।
   Gandhi's thought and education philosophy of Vinoba Bhave.
4. आचार्य विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव।
   Social and Economic Impact of Acharya Vinoba Bhave's Philosophy of Education.
5. आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक-विचार और वर्तमान नयी शिक्षा नीति।
   Educational thoughts of Acharya Vinoba Bhave and Current New Education Policy .
6. शिल्प एवं ग्राम्य प्रोद्योगिकी और विनोबा भावे की शिक्षा पद्धति।
   Crafts and Rural Technology and Education Methodology of Vinoba Bhave.
7. आचार्य विनोबा भावे की शिक्षा पद्धति और वर्तमान शिक्षा।
   Education Methodology of Acharya Vinoba Bhave and Current Education .
8. योग-उद्योग-सहयोग।
   Yoga-Industry-Cooperation.
9. विनोबा भावे के शिक्षा दर्शन की सामाजिक एवं आर्थिक उपयोगिता।
   Social and Economic Utility of Education Philosophy of Vinoba Bhave .
10. नारी स्वावलम्बन और विनोबा भावे।
    Women Self-Reliance and Vinoba Bhave.

शोध पत्र के सम्बन्ध में

इस तीन दिवसीय ऑफलाइन संगोष्ठी में सहभागिता के लिए शोध पत्र की समग्रता के साथ आप सादर आमंत्रित हैं। शोधकर्ता उपरोक्त किसी एक बिंदु पर अथवा एक से अधिक बिंदुओं पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं। शोध पत्र मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए तथा 3000 से 4000 शब्दों के मध्य हो। स्कैन कॉपी स्वीकार नहीं होगी। शोध पत्र Word File में ही ईमेल करें। हिंदी के लिए Kruti Dev 010 Font तथा अंग्रेजी के लिए Times New Roman का प्रयोग करें। शोध पत्र को anupkumaracee@gmail.com पर दिनांक 15 April, 2022 तक अवश्य प्रेषित कर दें। शोध पत्र पर शोधकर्ता अपना ईमेल एवं मोबाइल नंबर अवश्य अंकित करें। शोध पत्र वाचन के पश्चात हार्ड कॉपी सलाह्यक्ष के पास अवश्य जमा करा दें, अन्यथा शोध पत्र प्रकाशन हेतु विशेषज्ञ समिति द्वारा चयनित नहीं हो पायेगा।

पंजीकरण शुल्क

संगोष्ठी में सहभागिता हेतु पंजीकरण शुल्क 1200 रु. (एक हज़ार दो सौ रुपये) मात्र देय है। संयुक्त रूप से शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले सहभागी व्यक्तिगत रूप से अलग - अलग पंजीकरण करें। सहभागीगण 15 अप्रैल, 2022 तक पंजीकरण करा लें। शुल्क का भुगतान कैश / डी. डी. / चेक द्वारा भी किया जा सकता है। डी. डी. / चेक के पीछे सहभागीगण अपना विवरण अवश्य लिख दें। डी. डी. / चेक द्वारा भुगतान "Head - Department of Adult & Continuing Education, Dr. Rammanohar Lohia Awadh University" के पक्ष में देय होगा। ऑनलाइन पेमेंट विश्विद्यालय के खाते - "Head-Department of Adult & Continuing Education, Dr. Rammanohar Lohia Awadh University", A/c No. 5212523627, ब्रांच : अवध यूनिवर्सिटी कैंपस, I.F.S.C. कोड : CBIN0283302 पर किया जायेगा। ऑनलाइन पेमेंट का विवरण पंजीकरण फॉर्म में अवश्य भरें और उसकी ईमल भी कर दें। सभी सहभागी अपने शोध पत्र के साथ अपने ऑनलाइन पेमेंट का विवरण एवं उसकी एक छवि भी अनिवार्य रूप से संलग्न करें। संगोष्ठी में भाग लेने वाले सहभागीगण सभागार में प्रवेश करते समय पंजीकरण रसीद एवं परिचय पत्र / आधार कार्ड अपने पास अवश्य रखें। सहभागीगण समय से सभागार में प्रवेश कर अपना स्थान ग्रहण करें। सभी सहभागीगणों से अनुरोध है कि वे अपने मोबाइल फ़ोन को साइलेंट मोड पर या स्विच ऑफ रखें।

भोजन की व्यवस्था : पंजीकरण करा चुके सहभागियों के लिए ब्रेकफास्ट, लंच एवं चाय (Tea) की व्यवस्था निःशुल्क रहेगी। संगोष्ठी में सहभागिता हेतु किसी भी प्रकार का मार्ग व्यय देय नहीं है।

शोध पत्रों का प्रकाशन : निर्धारित तिथि के अंदर प्रेषित शोध पत्रों का विषय विशेषज्ञों द्वारा चयनित होने पर यथाशीघ्र प्रकाशन ICPR के साथ किया जायेगा, जिसे निर्धारित शुल्क देकर प्राप्त किया जा सकता है। प्रोसीडिंग का पेमेंट "Head - Department of Adult & Continuing Education, Dr. Rammanohar Lohia Awadh University" में जमा करना होगा।

ऑनलाइन पंजीकरण लिंक

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSd_cYgIvU_Ae2A8gQAWMUpmzh1OpImDQ8mavPspuleMSWcgkg/viewform